International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 1; January 2016; Page No. 48-50

महादेवी वर्मा की संस्मरणात्मक कृति 'मेरा परिवार' में आत्मीय अभिव्यंजना एवं संवेदना

पूजा रानी

एम.फिल. (छात्रा), दक्षिण भारत हिंन्दी प्रचार सभा, चेन्नइ, तमिलनाडु, भारत।

प्रस्तावना

संस्मरण साहित्य के विकास में महादेवी वर्मा का योगदान सदैव सर्वोपरि रहेगा। लेखिका जहाँ छायावादी कवियत्री के रूप में विख्यात है, वहीं इनकी ख्याति संस्मरण और रेखाचित्रों के रूप में दूर–दूर तक फैली हुई है। प्रसाद, पंत, निराला के पश्चात् लेखिका का नाम छायावादी रूपी भवन के चार स्तम्भकारों के रूप में प्रसिद्ध है।

संस्मरण का अर्थ

किसी वस्तु, व्यक्ति, जीव–जन्तु या किसी विषय पर स्मृति के आधार पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है। लेखक जो कुछ अपने आस–पास के वातावरण को स्वयं देखकर अनुभव करता है। उसी का वर्णन संस्मरण में करता है। लेखक के स्वयं के अनुभव व संवेदनाऐं संस्मरण में अन्तर्निहित होती है।

हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक संस्मरण लेखकों में पद्म सिंह शर्मा का नाम लिया जाता है। हिंन्दी के प्रमुख संस्मरणकारों में रामवृक्ष बेनापुरी, कैन्हयालाल मिश्र, शांतिप्रिय द्विवेदी, श्री राम शर्मा, प्रभाकरमाचवे, धर्मवीर भारती आदि के नाम प्रमुख है। हिन्दी साहित्य संस्मरण एवं रेखाचित्र लेखन में महादेवी वर्मा का नाम सबसे ऊपर है। इनके द्वारा रचित संस्मरणों का महत्व अन्य संस्मरणकारों की तुलना में अधिक हैं। लेखिका ने समाज के शोषित एवं पीड़ित–जनों, नारी–जीवन, साहित्यकारों तथा मानवेत्तर पशु–पक्षियों को आधार बनाकर अपने संस्मरणों की रचना की है। अन्य संस्मरणकारों की अपेक्षा महादेवी जी के संस्मरणों की संख्या सर्वाधिक है। महादेवी वर्मा के चार संकलन प्रकाशित हुए है। अतीत के चलचित्र (1941ई0), स्मृति की रेखाएं (1943ई0), पथ के साथी (1956ई0) मेरा परिवार (1972ई0)।

'मेरा परिवार' महादेवी वर्मा की संस्मरणात्मक कृति है। जिसमें लेखिका ने मानवेत्तर पशु–पक्षियों के जीवन के प्रति आत्मीय संवेदना व अभिव्यंजना प्रकट की है। 'मेरा परिवार' संस्मरणात्मक कृति में लेखिका ने अपने पालतू पशुओं, जीव–जन्तुओं से संबंधित यादों को एकत्रित कर विभिन्न संस्मरणों के रूप में उदधृत किया है। 'मेरा परिवार' में लेखिका ने कुल सात संस्मरण लिखे हैं। प्रत्येक संस्मरण का योग्यता के आधार पर अपना एक विशेष महत्व है। ''इस प्रकार सब पशु–पक्षियों के संख्या, रंग, विशेष लक्षण, नाम आदि लिख लिए गए। उस समय ज्ञात नहीं था कि भविष्य में ऐसे स्मत्यंकन की परम्परा अटूट हो जाऐगी। परन्तु बालक–पन की इसी गद्यात्मक अभिव्यक्ति के बाजू पर मेरे सारे संस्मरण अंकुरित, पल्लवित और पुष्पित हुए है।"[1]

महादेवी वर्मा के जीवन का बहुत समय उनके पालतू जीव–जन्तुओं के साथ बीता। लेखिका के द्वारा रचित बहुत सी कहानियाँ पशु–पक्षियों पर आधारित है। मेरा परिवार 'संस्मरणात्मक कृति में 'नीलकण्ठ' भी लेखिका द्वारा रचित संस्मरण है। नीलकण्ठ एक मोर (मयूर) है। लेखिका अपने जालीघर में दो मोर के बच्चे (मोर–मोरनी का जोड़ा) लेकर आती है। मोर का नाम नीलकण्ठ तथा मोरनी का नाम राधा रखा जाता है। नीलकण्ठ बहुत ही साहसी, निडर और आकर्षक पक्षी था। लेखिका का उसके प्रति अत्याधिक प्रेम व लगाव था। अपने कोमल हृदय व अच्छे स्वभाव के कारण नीलकण्ठ ने जालीघर के सभी पशु–पक्षियों को अपना दोस्त बना लिया। राधा से नीलकण्ठ को अत्याधिक लगाव था परन्तु अचानक कुब्जा मोरनी के दोनों के बीच में आने से दोनों दूर–दूर रहने लगे क्योंकि कुब्जा भी नीलकण्ठ के प्रति आकर्षित थी तथा राधा को नीलकण्ठ के साथ देखते ही राधा को मारने दौड़ती। उसने अपनी चोंच मार–मार कर राधा के पंख नोच डाले तथा कलगी भी नोच डाली। "इस कलह कोलहाल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकण्ठ की प्रसन्नता का अन्त हो गया।।"[2] ''अन्त में तीन–चार मास के उपरान्त एक दिन सवेरे जाकर देखा कि नीलकण्ठ पूँछ–पंख फैलायें धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंख में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ। वास्तव में नीलकण्ठ मर गया था।"[3] इस कारण कुब्जा मोरनी के आने से तथा राधा से दूरी बर्दाश्त न होने के कारण 'नीलकण्ठ' संस्मरण के माध्यम से पशु–पक्षियों तथा जीव–जन्तुओं के प्रति मार्मिक संवेदना तथा आत्मीय अभिव्यंजना व्यक्त की है तथा जानवरों के प्रति करूणा, प्रेम, लगाव तथा संरक्षक भाव भी प्रकट किया है।

'सोना' नामक संस्मरण में महादेवी का सोना नामक पालतू हिरनी के प्रति अत्याधिक लगाव था। जब सोना शावक (छोटी) थी तो महादेवी के परिचित डा0 बासु की पोत्री सुस्मिता ने सोना को लेखिका को उसकी अच्छी तरह से देखभाल करने के लिए सौंप दिया था। लेखिका ने एक छोटे बच्चे की तरह उसकी देखभाल की। उसे दूध शीशी से पिलाना, ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब खिलाना–पिलाना आदि अत्याधिक कठिन था परंतु महादेवी ने यह सब बड़े ही प्रेमपूर्वक तथा ममतापूर्वक किया। ''उसका मुख इतना छोटा–सा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे–धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया।''[4] लेखिका बताती है कि ''मेरे प्रति स्नेह–प्रदर्शन के उसके कई प्रकार थे। भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती, मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती।।"[5]

महादेवी वर्मा का गर्मियों की छुट्टियों में बद्रीनाथ यात्रा का कार्यक्रम बना था। तो वह सोना को सेवकों के भरोसे छोड़कर यात्रा पर चली गई। जब लेखिका यात्रा से वापिस आई तो उन्हें सेवकों द्वारा एक दुखद समाचार मिला कि सोना की मृत्यु हो गई है। ''ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई कि इधर–उधर कुछ खोजती–सी वह प्रायः कम्पाउण्ड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परन्तु उसमें खाद्य और स्वाद प्राप्त करने इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इस आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लम्बी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था।।"[6] "एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बन्धन की सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण

मुख के बल धरती पर आ गिरी, वह उसकी अन्तिम साँस और अन्तिम उछाल थी।।"[7] इस प्रकार (सोना) संस्मरण के माध्यम से लेखिका ने पशु–पक्षियों के प्रति मानवीय संवेदना तथा सोना के प्रति करूणा, वेदना, पीड़ा के भावों को व्यक्त किया है।

'गौरा' नामक संस्मरण में गौरा लेखिका द्वारा पालित दूधारू पशु (गाय) है। जिसे लेखिका अपनी बहन श्यामा के घर से लेकर आई थी। उस समय उसका नामकरण गौरांगिनी अर्थात् गौरा रखा गया। जब गौरा को मेरे घर लाया गया तो मेरे परिचितों ने तथा परिचारकों ने श्रद्धापूर्वक गाय का स्वागत बड़े ही धूमधाम से किया। ''गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों जैसा चकित विस्मय न होकर एक आत्मीय विश्वास ही रहता है। उस पशु को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है परन्तु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आंतक।।"[8] ''एक वर्ष के उपरान्त गौरा एक पुष्ट सुन्दर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरू का पुतला जान पड़ता था। बछड़े का नाम रखा गया लालमणि। माता–पुत्र दोनों निकट रहने पर हिमराशि और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे। गौरा प्रातः सांय बारह सेर के लगभग दूध देती थी। अतः लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस–पास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते–बिल्ली सब पर मानो 'दूधो नहाओ' का आर्शीवाद फलित होने लगा।।''[9] गौरा के दूध की मात्रा अधिक होने पर लेखिका ने ग्वालों से दूध मंगवाना बंद कर दिया। ग्वालों ने अपने धंधे को चौपट होता देख ईर्ष्या के कारण गौरा को गुड़ में सुई रखकर खिला दी। जिसके खानें से गौरा की मृत्यु हो जाए।

''तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष आरंभ हुआ, जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है। डॉक्टर के कहने पर नित्य कई–कई सेर सेब का रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता। शक्ति के लिए इन्जेक्शन पर दिये जाते। गौरा अत्यन्त शांति से बाहर और भीतर दोनों ओर की चुभन और पीड़ा सहती थी। केवल कभी–कभी उसकी सुन्दर पर उदास ऑखों के कोनों में पानी की दो बूंदे झलकने लगती थी।।"[10] ''अन्त में एक दिन ब्रह्ममुहूर्त में चार बजे जब मैं गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कंधे पर रखा, वैसे ही वह एकदम पत्थर के समान भारी हो गया और मेरी बाँह पर से सरककर धरती पर आ गिरा। कदाचित् सुई ने हृदय को बेंधकर बन्द कर दिया।।"[11]

महादेवी वर्मा अपने पालतू पशुओं के पार्थिव अवशेष गंगा में विसर्जित करती थी। गौरा के पार्थिव शरीर को विसर्जन के लिए ले जाते समय लेखिका के हृदय में मानो करूणा और वेदना की लहरें हिलोरें ले रही थी। इस प्रकार 'गौरा' संस्मरण में महादेवी वर्मा ने मार्मिक संवेदना तथा आत्मीय अभिव्यंजना व्यक्त करते हुए गौरा के प्रति वेदना, दया, पीड़ा, अपनापन, लगाव, समर्पण तथा करूणा का भाव व्यक्त किया है।

इलाचन्द्र जोशी ने महादेवी वर्मा की संस्मरणात्मक कृतियों से प्रभावित होकर लिखा है कि "एक साधारण से लघुप्राणी गिल्लू (उनकी गिलहरी का यही नाम है) की उसके मानवेत्तर जीवन के क्षुद्र कोटगत मंच से इस सफाई के साथ मानवीय मंच के व्यापक परिप्रेक्ष्य में उभारकर उतारा गया है कि साँस को बार–बार रोककर उस नाटक के क्लाइमेक्स की उत्सुकता की पूर्ति के लिए उन्मुख होना पड़ता है। यही जादू इनकी गौरा (गाय), नीलू (कुत्ता), सोना (हिरनी), दुर्मुख (खरगोष)आदि जीवों के जीवन–इतिहास–चित्रण में अमष्त–स्पर्श की तरह व्याप्त पाया जाता है।''[12]

महादेवी वर्मा अपनी आत्मिका में लिखती है कि "स्मशति यात्रा में पशु–पक्षी ही मेरे प्रथम संगी रहे हैं, किंतु इसे दुर्योग्य ही कहा जायेगा कि मनुष्य ने उनसे यह प्राथमिकता अनायास छीन ली।।"

'गिल्लू' नामक संस्मरण भी महादेवी के हृदय की पीड़ा, वेदना तथा करूणा को व्यक्त करता है। लेखिका अपने बरामदें में लिपटी सोनजुही की बेल पर लगी पीली कली को देखकर लघु प्राण गिल्लु की यादों में खो जाती है।

एक दिन महादेवी ने देखा कि आंगन में गमले के पीछे गिलहरी के बच्चे पर कुछ कौए प्रहार कर रहे हैं। उसके शरीर पर चोंच की चोट के निशान पड़े हुए हैं। जिस कारण वह मरे के समान लग रहा है। करूणामयी महादेवी ने कौओं से उसकी रक्षा की तथा उसे अपने कोमल हाथों से उठाकर घर के अंदर ले जाकर घावों पर पेन्सिलिन लगाई तथा मरहम पट्टी की। ''कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उंगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर–उधर देखने लगा।''[13]

''हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक संज्ञा का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे।"[14] लेखिका का गिल्लू के प्रति अत्याधिक स्नेह था। लेखिका के पास अनेक पशु–पक्षी होने के बावजूद भी किसी को भी लेखिका की थाली में खाना खाने की हिम्मत नहीं होती थी। ''गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने को कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार–बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक–एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता।''[15]

एक बार महादेवी मोटर दुर्घटना में घायल हो गई थी। लेखिका को कई दिन अस्पताल में रहना पड़ा। जैसे ही लेखिका के कमरे का दरवाजा खुलता तो गिल्लू अपने झूले से उतरकर दरवाजे की तरफ दौड़ता हुआ लेखिका को ढूंढता परन्तु अन्य को देखकर वापिस अपने झूले में जाकर छिप जाता। ''सब उसे काजू दे जाते, परन्तु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिससे यह ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।''[16] गिलहरी के जीवन का समय दो साल से अधिक नहीं होता। गिल्लू का अंत समय नजदीक आ गया था। पूरा दिन उसने ना खाया, ना कहीं बाहर गया।''रात में अन्त की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था। पंजे ठण्डे हो रहे थे परन्तु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी ओर के जीवन को जागने के लिए सो गया।''[17]

''सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गयी। इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी इसलिए भी कि उस लघुघात का, किसी वासन्ती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।''[18]

इस प्रकार संस्मरणात्मक कृतियों के द्वारा लेखिका के करूणामयी रूप के बारे में पता चलता है। लेखिका केवल मानव प्रेमी ही नहीं थी बल्कि अन्य पशु–पक्षियों से भी प्रेम करती थी। लेखिका के हृदय में जीव–जन्तुओं के प्रति अत्याधिक लगाव, ममता, प्रेम, संवेदना तथा अपनेपन के भाव व्यापत था। इनके संस्मरणों में भावुकता सर्वत्र देखी जा सकती है। लेखिका ने नीलकण्ठ, गिल्लू, सोना, दुर्मुख, गौरा, नीलू आदि मानवेत्तर जीवों के प्रति अत्यधिक प्रेम को उजागर कर अपने हृदय की करूणामयी तथा ममतामयी छवि का वर्णन किया है।

महादेवी वर्मा ने सरल तथा स्पष्ट शैली में अपने जीवन के अनुभवों को लिखित संस्मरणात्मक कृतियों के द्वारा पाठ्क के समक्ष प्रस्तुत किया है ताकि पाठ्क मानवेत्तर पशु–पक्षियों के प्रति उचित व्यवहार तथा अपनेपन के लिये सोचने को विवश हो जाये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वर्मा महादेवी, मेरा परिवार, आत्मिका, पृष्ठ सं0–29
2. वही, नीलकण्ठ, पृ0 सं0–29
3. वही, पृ0 सं0–30
4. वही, सोना, पृ0 सं0–43
5. वही, पृ0 स0.45
6. वही, पृ0 सं0–49
7. वही, पृ0 सं0–50
8. वही, गौरा, पृ0 सं0–64
9. वही, पृ0 सं0–65,66
10. वही, पृ0 सं0–67
11. वही, पृ0 सं0–69
12. वही, गिल्लू, पृ0 सं0–10
13. वही, पृ0 सं0–34
14. वही, पृ0 सं0– 35
15. वही, पृ0 सं0–36
16. वही
17. वही, पृ0 सं0–37
18. वही